Vijay Kumar Jha
Deptt in History
Asso Prof
V.S.J. College Rajnagar

Mauryan Art And Artchitecture.

मौर्य कला का न तो क्रमिक विकास हुआ और न क्रमिक पतन बल्कि ये सम्राट अशोक के शासन काल से प्रारम्भ हुआ और उसी के शासन काल में समाप्त हुआ। भारत में स्थापत्य और मूर्तिकला के अवशेष तो हड़प्पा संस्कृति से प्राप्त होते हैं। इस कला और मौर्य कला के मध्य 1500 वर्ष का अन्तराल है। मौर्य काल कि सभी कला अशोक कालीन है और उसका निर्माण अशोक के राजाश्रय में हुआ था। V.A Smith का कथन है कि अशोक कालीन कलाकार विदेशी थे और जब राजाश्रय समाप्त हो गया तो विदेशी मूल के कला भी समाप्त हो गई। लेकिन अनेक विद्वानों ने कला के विदेशी मूल को नहीं मानते हैं। वस्तुतः अशोक के धार्मिक उत्साह ने इस कला को जन्म दिया और कला को धर्म कि सेवा में लगाया था। स्थापत्य और मूर्ति कला कि जो उदाहरण हमें मिलते हैं वह सभी प्रत्यक्षतः मौर्य दरबार द्वारा बनवाये गये हैं। इसका श्रेय निश्चित रुप से शक्तिशाली सम्राट किसे होंगे।

राज्याश्रित कलाकारों द्वारा निर्मित निम्न कला अवशेष मौर्य साम्राज्य से प्राप्त हुए हैं। (1) नगर निर्माण और राजप्रासाद (2) गुफाएं (3) स्तूप, (4) स्तम्भ, (5) पशु मूर्तियाँ इसके अतिरिक्त कुछ लौकिक एवं जन कला के भी अवशेष मिले हैं। जैसे यक्ष मूर्तियाँ, दीदारगंज से प्राप्त चामर ग्राहिणी, आदि। मौर्य काल में मुख्य रुप से स्तम्भ, स्तूप तथा पशु मूर्तियों का अवशेष मिले हैं। इन कला कृतियों को अशोक धम्म प्रचार के उद्देश्य से निर्मित किया था। धर्म कि साधना में सौन्दर्य पक्ष की उपेक्षा नहीं किया गया था।

(1) नगर निर्माण और राजप्रासाद :— महावरिवान, स्ट्रैब

Scanned with Cam

तथा कौटिल्य के वर्णनों से नगरों का विवरण मिलता है। मौर्यकाल में पाटलिपुत्र एक वैभवशाली नगर था जो गंगा और सोन नदियों के तट पर है। नगर समानान्तर चतुर्भुजाकार बसा था इसके चारों ओर लकड़ी कि प्राचीर है जिसके बीच में कई सुराग है जिससे तीर छोड़ी जाती थी दिवार के चौतरफ खाई एवं दिवार में 570 बुर्ज और 64 द्वार थे मेगास्थनीज ने भी इस नगर कि खासियत कि तारीफ किया है। पटना के निकट कुम्हरार में जो खुदाई कार्य हुये उसमें मौर्य प्रासाद के अवशेष के साथ कई प्राचीर के अवशेष प्राप्त हुये है। मेगास्थनीज के अनुसार यह राजप्रासाद सूसा और एकबताना के राजप्रासादों से भी सुन्दर था। खम्भों पर सोने के पत्तर चढ़े हुये थे राजसिंहासन, पादपीठों सोने चांदी से जड़ित थे। सभा भवन चालिस स्तम्भों पर टिका था यह 120 फीट चौड़ा तथा 140 फीट लम्बा था। शयनागार इस तरह बना था कि उसमे अग्नि और सर्प प्रवेश नहीं हो सके। फाहयान ने इस राजप्रासाद कि भुरि भुरि प्रशंसा कि है। उनका कथन था कि यह राजप्रासाद मानवकृति नहीं बल्कि देवकृति है। खम्भों पर अद्वितीय उभरे हुये चित्र बने थे

(2) गुहा निर्माण :— अशोक ने वास्तुकला के क्षेत्र में एक नवीन शैली का निर्माण किया अर्थात चट्टानों को काटकर कंदराओं का निर्माण किया। अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 12वें वर्ष में बाराबार पहाड़ियों में गुफा का निर्माण किया था उसके पौत्र दशरथ ने नागार्जुनी पहाड़ीयो में आजीविकों के लिये गुफाओं का निर्माण किया था। इन गुफाओं में इन सम्राटों के लेख उत्कीर्ण है। इन गुफाओं में सुदामा गुफा सबसे प्राचीन है जो अर्द्ध वृत्ताकार है। दीवारों पर काफी चमकदार पालिश है। इस गुफा का निर्माण अशोक के शासन काल में हुआ था। इस गुफा में काष्ठ शैली का प्रयोग है। दशरथ द्वारा निर्मित गुफा में गोपी गुफा प्रमुख है इसके दोनों किनारे पर वृत्ताकार मण्डप बने है।

(3) स्तूप :— स्तूपों का निर्माण महात्मा बुद्ध के अवशेषों को सुरक्षित रखने के लिये हुआ था। इसका बुद्ध से सम्बन्धित घटनाओं को स्मरणीय करने के लिये बनवाया गया था। अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण करवाया था। धर्मराजिका स्तूप के निर्माता अशोक थे सारनाथ और सांची के स्तूप के निर्माता अशोक थे। यह स्तूप ईंटों का बना था जिसकी ऊंचाई 54 फीट है। भारहुत का स्तूप

JUNE
Su Mo Tu We Th
30
2 3 4 5 6 7
9 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29

Scanned with Cam

अति जीर्ण है। इस पर विजित बौद्ध गाथा अंकित है।

(4) स्तम्भ :— मौर्य काल में सबसे कलात्मक प्रस्तर स्तम्भ पर पशु पक्षी का उत्कीर्ण चित्र है इस पर ब्राम्ह लिपि अंकित है। प्रमुख स्तम्भ, दिल्ली, प्रयाग लोरिया - अरेराज में है इस पर अशोक के लेख उत्कीर्ण है, लुम्बनी, साँची, सारनाथ, कौशाम्बी में प्राप्त स्तम्भों में अशोक कालीन अभिलेख प्राप्त होते हैं। स्तम्भ एकाश्म है और ऊँचाई 40 फीट है जिसपर चमकदार कालिशपालिश है। पाषाणों को काट, तराशकर स्तम्भ बनाया गया था। स्तम्भों कि बनावट ज्यामितीय सिद्धान्त पर किया गया था। स्तम्भ के तीन भाग मुख्य धारताकृति तथा पशु आकृति है। स्तम्भों का कुछ भाग भूमि में तथा शेष भाग ऊपर है।

(5) शीर्ष :— शीर्ष का तात्पर्य शिखर है जहाँ मुख्य पशुमूर्ति का निर्माण किया गया है, हाथी, सिंह, चीता तथा एकुर्वार पशुओं कि मूर्ति भवन के शिखर पर जीवन्त प्रतीत होता है। विश्व के किसी भी देश में कला कि इस सुन्दर कृति से बढ़कर शिल्प कला का उदाहरण पाना कठिन है। स्तम्भों के शीर्ष यूनानी तथा ईरानी कला के अनुसरण पर बनाये गये हैं। अशोक कला पर ईरानी प्रभाव परिलक्षित होता है। ईरान से कलाकारों को मंगाकर अशोक भारतीय कलाकारों को प्रशिक्षण दिया था। पालिश का ढंग अखमनी साम्राज्य के कलाकारों द्वारा किया गया। इस काल के कलाकारों पर इण्डो आयोनियन विचारों का प्रभाव था। शीर्ष कि कला भारतीय परम्परा कि कला है। आवांगमुखी कमल, विष्णु भगवान, नील कमल और उदीयमान सूर्य कि उत्कीर्णता इस कला कि विशेषता है लोक कला में मथुरा के पास परखम से प्राप्त यक्ष यक्षिणी कि मूर्ति कला कि विशेषता को प्रगट करता है। दीदारगंज पटना से प्राप्त चामर ग्राहिणी यक्षिणी कि मूर्ति आधिक विकसित अवस्था में है भारी आकृतियों के ये मूर्ति पारिधानसे आवेष्ठित अत्यन्त मनोरम है।